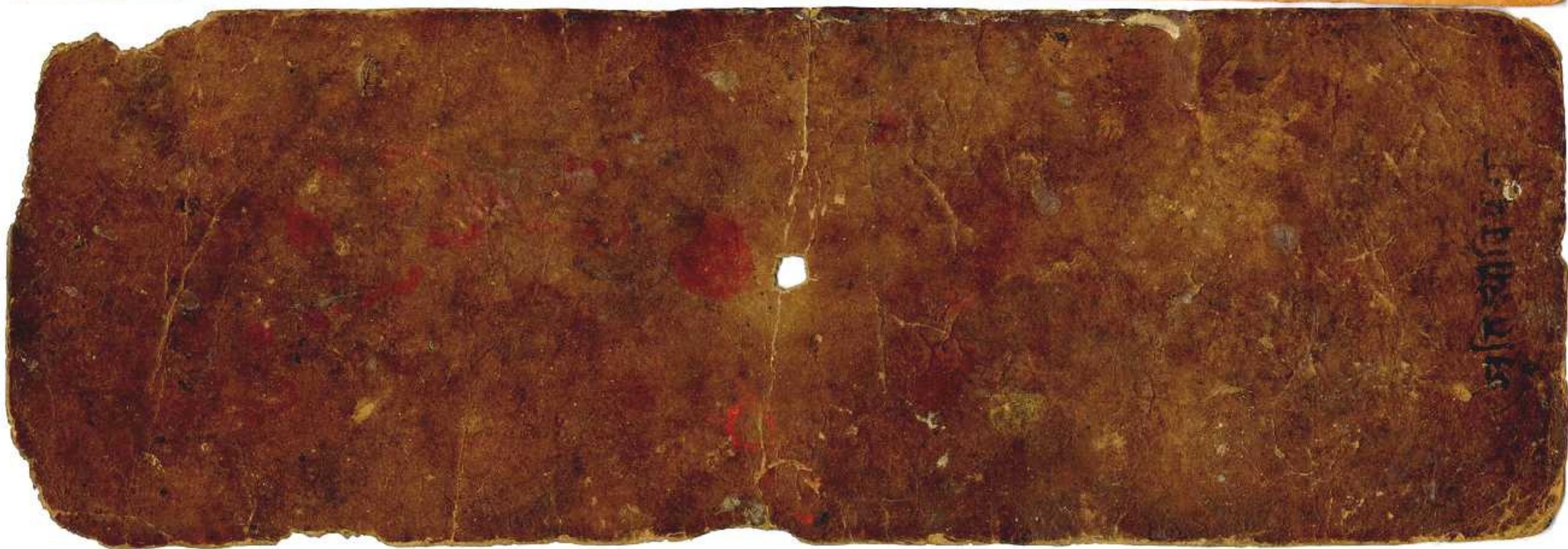


पञ्चाभिषेकविधि



१३० नमः श्री वसन्ता य ॥ श्री दन्का य ॥

नकं थगा पंचक मः कं हः सद्यः सकूटः

धूमि ॥ ७ वायः शुभ्रमलुल पंचगवः

जादवपूजाः माहनि आदिका यमलु

खवल्लि ह्या यगा समाधिः कं हः सद्यः सकूटः

॥ यक्षरिषक विधिमाह ॥ कायां थाप

पंचगवः पादः सकूटः आदिः अकूटः वादिः

ध्यायः सिंधू नक यः पादः कं हः आदिय

धिलः किमने विहर्ज ॥ ७ नाययजाल

थापिपूजाः दवपूजाः चाक्रपूजा ॥

धमस्त्व बजाचाय सुरत श्री महाविहार DH 264

थनः क्षिप्य नसास्यं रुकः स्वस्ति कसकयः शुभ्रमलुल दनकः सकूटः विसर्जन ॥

क्षिप्याधिवासनः रावना निनां जनव

नेत्रमलुल वायक ॥ ७ रुमध्यः चक्र ॥

यं धनरा नः किं ॥ लः वरुणं वा वः वरु

॥ वा क्रुहायः किं ॥ नः पूनप ॥ लः सलगवः

जः नाचाः सकूटं नायः पयः रावय ॥

७० पद्मगासः विस्मावज ॥ ७० किमध्य ॥

नाकानायाः पद्मगा नाः अग्निना लावज

७० वा क्रुहायः किं ॥ नः पूनप ॥ लः सलगवः

पं

ननु गच्छ सूर्यः ॥ धीवज्ज्वाला स्थापयन्नादकनादं २ मंति ॥ यनहि स्थंगु नूया कञ्ज
धमना ॥ ॥ ॐ संमन्वाह नंहु मा चर्यः अहं मम कडया हका नामाहि
प्याहं अरिषकं माहाहानं प्राप्तार्थ विहाय याम्यहं ॥ ३ ॥ यनगु नूः २
याकदाह नया ॥ वाक्य ॥ ॥ ॐ नहु नत्वं स्यादि ५ ॥ यनहीषसः सा इदं ना
य अकन लूदाहा स्थापयन्नादकनादं २ मंति ॥ यनहि स्थंगु नूया कञ्ज
धमना ॥ ॥ ॐ संमन्वाह नंहु मा चर्यः अहं मम कडया हका नामाहि
प्याहं अरिषकं माहाहानं प्राप्तार्थ विहाय याम्यहं ॥ ३ ॥ यनगु नूः २
याकदाह नया ॥ वाक्य ॥ ॥ ॐ नहु नत्वं स्यादि ५ ॥ यनहीषसः सा इदं ना

२

ॐ ॐ १ प्रव नस का नायः ॥ अकगु नूः च नः ॥ यस्तु नायः ॐ वजा चर्या यः सकर्म
वर्जितः ॥ पादाद्यप्रतिष्ठ स्वाहा ॥ ॥ पादपूजा दकः ॥ किं नूः ॥ ॥
ॐ गु नू वज्ज्वाला धनं ॥ गु नू संध ॥ ॥ यवच गु नू वज्ज्वाला धनं ॥ यवच गु नू सः
र्व नमा म्यहं ॥ ॥ गु नू नः ॥ विषया कलं खन हा संस्वान विषया वाक्य ॥ ॥
ॐ ॐ १ प्रव नस का नायः ॥ अकगु नूः च नः ॥ यस्तु नायः ॐ वजा चर्या यः सकर्म
वर्जितः ॥ पादाद्यप्रतिष्ठ स्वाहा ॥ ॥ पादपूजा दकः ॥ किं नूः ॥ ॥
ॐ गु नू वज्ज्वाला धनं ॥ गु नू संध ॥ ॥ यवच गु नू वज्ज्वाला धनं ॥ यवच गु नू सः
र्व नमा म्यहं ॥ ॥ गु नू नः ॥ विषया कलं खन हा संस्वान विषया वाक्य ॥ ॥
ॐ ॐ १ प्रव नस का नायः ॥ अकगु नूः च नः ॥ यस्तु नायः ॐ वजा चर्या यः सकर्म
वर्जितः ॥ पादाद्यप्रतिष्ठ स्वाहा ॥ ॥ पादपूजा दकः ॥ किं नूः ॥ ॥

पं

पद्ममुखनप्रवाहोक्तं विष्णुः साठि किं न्य नानक नं दू व ऊ जा क दि रु ऊ ४ स पः
 ह्लाक्ता स्य स्य रा व स म्च न नृपं ह्ला न स
 दि मूर्ति र्तिः पद्मा नि स स ग गं मा प
 ध्रुव य टा कां दि गी क नृ स प य्थां कः
 वर्जि र्ग वा धि वि रु मृ न पृ ह्नी क क ल ह्ना स्त वि ष्यं पद्मा नि षु क म रि षि च मा

४

नं या गि नी ग ह गी य मा हं म ग ल गी र्ग ॥ ग वि ष्य न नि पा ला हा कि स रु स्यं मि स
 स पि स्यं त्व न ॥ ग य त्म ऊ लं स क ल
 स र्व कू ला धि य स्य नि ष्ठा ष स त्वा ऊ
 य न मा रि ष केशा वृ कि क्त ह्मा रि ष
 सा दि च कं क य क रा रा व ना ॥ ग क ४ दू ऊ दू का ना धा ष कं व ऊ कं जा गा क्रा

पं

त्यं स्वद्वीज न ह्मा नीक ह्मा न सत्त्व की रू रं दृत्वा स पृथक् स य न पा प स वा दृत्वा स्व
डा ना हा क न स्व या न वि य गा धि य न
हा स स्व व ऊ स त्वा म रि षि च मि न
व श पा ण रि ष क श ॥ ॥ य न गु
अ रि ष क म हा व ऊ ण धा रु क न म स्तु रं द दा मि स र्व वृ द्वा नां णि गु द्वा ल य स म्भु वं ॥

जं

डां आ ४ व जा द का रि षि च रू रं स न क स्त्वं म द्वा ॥ ॥ रि षि यिं थ अ रि ष क व ऊ डा
उ र्थ चान गु स्व र्ग म ध्य पा ना ल नं न
स्व गा रु द नं उ त्प रि कृ या डा वा दृ गु
थ र्थं कृ प नि न क्रा कृ य क या न वि य
का री ष क श ॥ ॥ रा व ना रि षि च आः न त्वा स म्भु व नृ यं स न स त्वे न की रू रं न रु ४

५

सूक्तथागकदविहिकुंरुनरिपिंशसा नूयवजादिरि नूयनीयमानंमंगल
गीकंरावथरु ॥ मकूटपायक
मसूक्तंयुष्माकंपूजनाथमसूक्त
मकूटगाथिगुधसासमस्तकथाग
यादंरथागुसूक्तनयनिशंपूजायाचकथागस्थमकूटनपूजदास्यंपंचकूलः

٤

संज्ञक कायदायि अक्षुभाय नमः कृतादि न कम् ॥ ॥ ॐ वज्र धारणाय नमः ॥
 विष्णुः ॐ सत्त्ववाङ्मयः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥
 वज्र ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥
 महाशक्ति नमः कृतादि न कम् ॥ ॥ ॐ वज्र धारणाय नमः ॥
 विष्णुः ॐ सत्त्ववाङ्मयः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥

पं

रावाइक नलि नः अ न हान संरु नः ना कु दान हाम्भ कक्ष ॥ राहो ह्यो यो अभा
मकूट कलं गाथि द धा न सा समस्त
न न चा द अ न हान न न ड त्य रि रु
था थि गु म कू ट कू प नि रु ना ना रा
वा हा स क य ॥ ०० नि म कू टा रि ध क ॥

रा व सं म चो द कू गु लि रा व नं अरु
डा गु च न व कं म षू अ वि ना ही म स्
मि सा द न सा सिं धु कू य मि ड या ड ड
॥ रा व ना रा क क रु था रा थि नं च क ही ध

नं

मा टि कि डी का न व डू य म य नि ह क अ मि ना रु व नू पं हान स ला रि रु कू त्वा व डू
चा मि ना ल्म कं वि चि ल ॥ ॥ ही ख
धा रु क न म स्तु नं अ धा रि कू त्वा मः
व डू नां गु कू व डू स सि द्ध य ॥ ॥ ह ॥
गु स्व र्ग म स्तु पा ना न नं न म स्तु ना य दं न या गु थ अ रि ध क वि या नं कू प नि क थ ग

वम

लं ख न हा य ॥ अ रि ध कं म हा व डू कू
सि व डू व डू अ रि ध क कू ०० द न ल व
थ व डू अ रि ध क म हा क ड ड ध ना ड ड
थ अ रि ध क वि या नं कू प नि क थ ग

ककुलाथार्थिगुवजातिषकथसमष्टं वदरावशयकयागुअमवजकाडाकूपनि
 रुंरिं गुसिद्धिनायडाकुलागानरुड
 लखनहायगा ॥ डांवजातिषिचस
 काजकनसंरुवा॥ महाकनपदपाप
 रुंरिं गुसिद्धिनायडाकुलागानरुड
 लखनहायगा ॥ डांवजातिषिचस
 काजकनसंरुवा॥ महाकनपदपाप
 रुंरिं गुसिद्धिनायडाकुलागानरुड
 लखनहायगा ॥ डांवजातिषिचस
 काजकनसंरुवा॥ महाकनपदपाप

अकनपदनागाआडाजिडासंरुडलिथूलिधकथाहामदुहला॥ वृंरिं वजातिषः
 क॥ ॥ रावनागाडिषांलंखंकाज
 हानसत्वारिचयसुयक्षमाद्यसिद्धि
 अरिषकं महावजं पुष्पाशुकनमस्तु
 किष्टवजसमस्तं हावजद्यलुअ॥ गृही नासिमयारुगवन्मायिसंनिदिभारुव॥

पं

यस्य विद्यायां खलं खलं न हाय ॥

वै

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

नमो भगवते वासुदेवाय ॥

नमो भगवते वासुदेवाय ॥

युक्त्या कुरुणा नृणां नृणां दयाधि

पः धर्मादया वा धयतु धर्मादयाध

२

चकं ॥ ह ॥ अमाद्यलगाधिदधानः

साऽत्यरिं मद्रुडा धर्मसयसद्वृद्धि

मद्रुद्वलरावमय सत्वसम्पाकं मयूनि नापनायायं अका न कायं मद्रुडा हानं

उदयमद्रुडा नाकायं धर्मर्थः उदयद्रुडा धर्मादयायं धून्वर्थं शुभ्रमाद्यलगाधि

॥ धनवर्गं विवका नाम मद्रुय ॥ ॥

यद्रुहिषापनि ॥ नृनिद्यलगाधिचक ॥

॥ धनवर्गं विवका नाम मद्रुय ॥ ॥

उवजसत्वा मरिषि चाभिः वजनामा

रिषकनधमिः यनमादिवजराः

सवजः उका नवजः नत्ववजः नागव

जः अमाद्यवजः ॥ ॥ मिसा वजवग

वजनेनात्मा वजराकिनी वजना ना वजना गन्धनामकाकिनी रुरुवसधा

पं

ॐ निना मारिष क॥	गथन चक्षुस मय विरय क॥	॥ नर मा ला ड द काः
म कू टा व ड चक्षु ना मा ष सु श रि ष	का च न॥ रु षि ष च्छु पा नि रु क्त ष	
रि ष क पा णा रि ष क म कू टा रि ष क	व जा रि ष क च क्षु रि ष क ना मा रि	१०
ष क थ पु ना अ रि ष क ना मा अ डा	थ लि अ रि ष क ला मा रु डा अ डा	
रु पा नि सं न ध न न पि डा रु षि ष पा नि	॥ च रि अ रि ष क ४ कि या च यो क तु	

या ग ध व ष व्या ख्या न म रु सा ध न च धि क मा रु वा कि रा रु षि ष अ डा रु पा नि सं न कि	
या या य च या या य म रु सं न जा ग या	य द न ला य म रु सा ध न प थ क रु प
नि रु अ धि क किं दू रु ला ध क गु न न	रि ष या क क दा रु ना ॥ गथन म
नु दान वि य वा गु न न जा प या र्श सि ष	या क वि य वा गु न न धा य ॥ द रु
रि म या रु ग व न् अ रि षि ना नि रु मा रु व षा	॥ रि षि ष न म रु का य या क धा य ॥

गृहीतासिमयारुगवन्समिधेसनिर्दिष्टा रुवशा, ॥ धननिर्दिष्टा ज्ञापयाय ॥
 नचत्वंयदंशुदृष्टमधुलख्यपूजना ॥ वक्तव्यंमांससमयाद्यथिनिनचत्वं
 गृह्ननवमनकथासाकविषमायनिः ॥ हाजदकावककिंयांकृत्याननकंप ॥ ११
 नंस्यात् ॥ ॥ हृदिष्यपानिःकृमिः ॥ शनध्वपंचारिष्यकयागुखदिक्ताः
 मलाकपानिहृदिनखलायमकडाग्वक्षनंधनद्वयडासकफिसाआदिपनध

दाशुदनिडागथश्चादधकंदनिडाथथश्रुथचादधकदुपानिश्कनमदुथ
 थश्रुथचादधकनसाधीवजसल्व ॥ नश्राहादयकाकयादूगडाधनव्य
 धाजागनकयकाडाकयिडाकृपानि ॥ क्ताहृदिष्यपानिःकृमांगुनूनधया
 थसयाकसाचसदिककार्थविषन ॥ दरुनययकाडाकयिडाननकसक
 निनडानिडाकनाथगुनिनकृपानिश्नसयाहृदिनंलायमदूगुपकनंकलसा

सप्तसिंहा नद वृद्धाष्टमच नमद्व नमं नका या जीडा इ जी ॥ ॥ धनमरु लुच
 वस या न स वरु न पि य ॥ ॥ धन
 कन रु मा य न आ ली र्वा द स ग र्वा मारु
 य पं च सा लि ली ह न क स म या न क
 ॥ ॥ धनमरु लुच

72

पंचाभीषेक—

धर्मरत्न बज्राचार्य सुरत श्री महाविहार

DH264